Ilm o Amal Ki Batein (Qist : 3) (Hindi)

हफ़्तावार रिसाला : 472
Weekly Booklet : 742

इ़ल्मो अ़मल की बातें

(क़िस्त़ : 3)

(इमाम ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की किताब “इह़याउल उ़लूम” से माख़ूज़ इ़ल्म, अ़मल, आदाब और बात़िनी इस्लाह़ का ख़ूबसूरत गुलदस्ता)

(सफ़ह़ात : 16)

ह़ज की क़बूलिय्यत की निशानी 03
पोशीदा अ़मल की फ़ज़ीलत 07
ख़्वाब के बारे में अ़जीब बात 11
मग़्फ़िरत की बिशारत 14

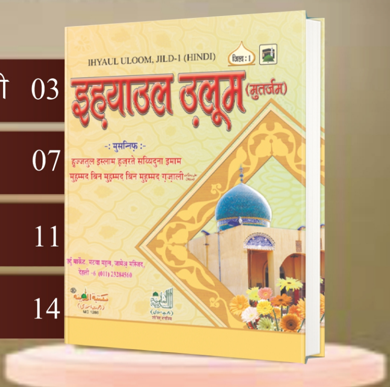

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى خَاتَمِ النَّبِيّٖنَ ط
اَمَّا بَعْدُ! فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

इ़ल्मो अ़मल की बातें (क़िस्त़ : 3)(1)

दुआ़ए अ़त्तार : या रब्बे करीम ! जो कोई 16 सफ़ह़ात का रिसाला "**इ़ल्मो अ़मल की बातें** (क़िस्त़ : 3)" पढ़ या सुन ले उस को नेक आमाल करने की तौफ़ीक़ दे, उस को मां बाप और ख़ानदान समेत जन्नतुल फ़िरदौस में बे ह़िसाब दाख़िला नसीब फ़रमा । اٰمِيْن بِجَاهِ خَاتَمِ النَّبِيّٖن صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

अल्लाह पाक के आख़िरी नबी, मक्की मदनी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : जिस ने शौक़ व मह़ब्बत की वजह से दिन और रात में मुझ पर तीन तीन मरतबा दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह पाक पर ह़क़ है कि वोह उस के उस दिन और रात के गुनाह बख़्श दे । (معجم کبیر، 362/18، حدیث: 928)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

सफ़रे ह़ज के आदाब

﴾1﴿ ह़ज पर जाने वाला तौबा से इब्तिदा करे । ﴾2﴿ नेक शख़्स को रफ़ीक़ बनाए जो भलाई का त़लबगार हो । ﴾3﴿ घर से निकलते वक़्त दो रकअ़त पढ़े । ﴾4﴿ घर के दरवाज़े पर दुआ़ पढ़े । ﴾5﴿ जब सुवारी पर सुवार हो तो दुआ़ पढ़े । ﴾6﴿ जब तक दिन गर्म न हो जाए कहीं पड़ाव न करे, ज़ियादा तर सफ़र रात में हो । ﴾7﴿ दिन के वक़्त ख़ूब एह़तियात़ बरते क़ाफ़िले से अलग तन्हा न चले । ﴾8﴿ जब बुलन्द जगह पर चढ़े तो 3 बार "अल्लाहु अकबर" पढ़े ।

(इह़याउल उ़लूम, 1/753 ता 759, मुलख़्ख़सन व मुल्तक़त़न)

---

1 ... येह रिसाला अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या की किताब "इह़याउल उ़लूम (उर्दू) जिल्द : 1" से तय्यार किया गया है ।

ह़ज के बात़िनी आदाब

﴾1﴿ नफ़क़ा (यानी ख़र्चा) ह़लाल कमाई से हो। ﴾2﴿ ज़ादेराह में वुस्अ़त हो। ﴾3﴿ रफ़स (हर फ़ुज़ूल), फ़िस्क़ और जिदाल (यानी झगड़े) को तर्क कर दे। ﴾4﴿ अगर हो सके तो पैदल ह़ज करे कि येह अफ़ज़ल है। ﴾5﴿ बोझ उठाने वाले जानवर पर बग़ैर कजावे के सुवार हो। ﴾6﴿ ह़ाजी का लिबास आ़म व सादा हो, परागन्दा ह़ाल और बिखरे हुए बालों वाला हो ज़ियादा ज़ेबो ज़ीनत न करे। ﴾7﴿ सुवारी के साथ नर्म बरताव करे। ﴾8﴿ क़ुरबानी कर के क़ुर्बे इलाही ह़ासिल करे। ﴾9﴿ राहे ह़ज में जो ज़ादे राह या क़ुरबानी वग़ैरा में जो माल ख़र्च करे ख़ुश दिली से करे। (इह़याउल उ़लूम, 1/793 ता 802, मुलख़्ख़सन)

ह़ज की चार क़िस्में

मरवी है कि "आख़िरी ज़माने में लोग ह़ज के लिए चार क़िस्में हो कर निकलेंगे : बादशाह ऐ़शो इ़शरत के लिए, उमरा तिजारत के लिए, फ़ुक़रा मांगने के लिए और क़ुर्रा दिखावे के लिए।" (इह़याउल उ़लूम, 1/793)

दीनो दुनिया

अल्लाह पाक दीन के बदले दुनिया अ़त़ा फ़रमा देता है लेकिन दुनिया के बदले दीन नहीं देता। (इह़याउल उ़लूम, 1/794)

मम्नूअ़ की त़रफ़ ले जाने वाला काम भी मम्नूअ़ होता है।

(इह़याउल उ़लूम, 1/795)

सफ़र को सफ़र कहने की वजह ?

सफ़र को सफ़र इस लिए कहते हैं कि येह लोगों के अख़्लाक़ को ज़ाहिर करता है। (इह़याउल उ़लूम, 1/796) और किसी को पहचानने के लिए कि वोह कैसा है ? उस के साथ सफ़र किया जाए।

तक़्वा

एक शख़्स ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه से कहा : "मेरा येह ख़त़ फ़ुलां तक पहुंचा दें ।" आप ने फ़रमाया : "(ठहरो !) मैं सुवारी के मालिक से इजाज़त ले लूं क्यूंकि मैं ने येह जानवर किराए पर लिया है ।" ग़ौर कीजिए ! उन्हों ने ख़त़ उठाने के मुआ़मले में भी तक़्वा इख़्तियार किया ह़ालांकि उस का कोई वज़्न नहीं होता । तक़्वा में येह एह़तियात़ का त़रीक़ा है क्यूंकि अगर थोड़े काम का दरवाज़ा खुल जाए तो येह आहिस्ता आहिस्ता ज़ियादा की त़रफ़ ले जाता है । (इह़याउल उ़लूम, 1/800)

ह़ज की क़बूलिय्यत की निशानी

मन्क़ूल है कि क़बूलिय्यते ह़ज की एक अ़लामत येह है कि वोह जिन नाफ़रमानियों में मुब्तला था उन्हें छोड़ दे और अपने बुरे दोस्तों को छोड़ कर नेकों की सोह़बत इख़्तियार करे, लहवो लइ़ब और ग़फ़्लत की मजालिस को छोड़ कर ज़िक्रो फ़िक्र और बेदारी की मह़ाफ़िल इख़्तियार करे । (इह़याउल उ़लूम, 1/803)

क़ुर्बे ख़ुदावन्दी का बेहतरीन ज़रीआ़

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं ख़्वाब में दीदारे इलाही से मुशर्रफ़ हुवा, मैं ने अ़र्ज़ की : "ऐ रब्बे पाक ! तेरे नज़्दीक कौन सा अ़मल अफ़ज़ल है जिस के ज़रीए मुक़र्रबीन तेरा क़ुर्ब ह़ासिल करते हैं ?" इरशाद फ़रमाया : "ऐ अह़मद ! वोह मेरा पाक कलाम (क़ुरआने पाक) है ।" मैं ने अ़र्ज़ की : "ऐ रब्बे पाक ! इसे समझ कर पढ़े या बग़ैर समझे पढ़े ?" इरशाद फ़रमाया : "समझ कर पढ़े या बग़ैर समझे ।" (इह़याउल उ़लूम, 1/826)

3 चीज़ें क़ुव्वते ह़ाफ़िज़ा का सबब

मुसलमानों के चौथे ख़लीफ़ा ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللہُ عَنْہ फ़रमाते हैं : तीन चीज़ें क़ुव्वते ह़ाफ़िज़ा में इज़ाफ़ा करती और बलग़म को ख़त्म करती हैं : ﴾1﴿ मिस्वाक करना ﴾2﴿ रोज़े रखना ﴾3﴿ क़ुरआने पाक की तिलावत करना। (इह़याउल उ़लूम, 1/827)

तुझे हमारे कलाम से क्या वासित़ा ?

बाज़ उ़लमाए किराम फ़रमाते हैं : "जब इब्ने आदम दौराने तिलावत लग़्व (यानी फ़ुज़ूल) बातों में मशग़ूल हो कर फिर पढ़ने लगता है तो उसे कहा जाता है कि तुझे हमारे कलाम से क्या वासित़ा ?" (इह़याउल उ़लूम, 1/828)

कसरते तिलावत के सबब....?

मुसलमानों के तीसरे ख़लीफ़ा ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللہُ عَنْہ इस कसरत से तिलावत फ़रमाते थे कि इस के सबब आप के पास दो मुस्ह़फ़ शरीफ़ शहीद हो गए थे। कई सह़ाबए किराम رَضِیَ اللہُ عَنْہُم देख कर क़ुरआने पाक पढ़ते और कोई दिन क़ुरआने पाक को देखे बग़ैर गुज़ारना ना पसन्द करते थे।

(इह़याउल उ़लूम, 1/843)

अल्लाह पाक का अपने बन्दे से कलाम

तौरात शरीफ़ में है कि (अल्लाह पाक इरशाद फ़रमाता है :) ऐ बन्दे ! क्या तुझे मुझ से ह़या नहीं आती ? कि तू रास्ते में चल रहा होता है, तेरे पास तेरे किसी भाई का ख़त़ आता है तो तू रास्ते से हट जाता और बैठ कर उस के एक एक ह़र्फ़ को ग़ौर से पढ़ता है यहां तक कि उस का कोई लफ़्ज़ नहीं छोड़ता जब कि येह मेरी किताब है, मैं ने इसे तेरी त़रफ़ नाज़िल किया है, देख ! इस में तेरे लिए

कितनी तफ़्सील है, मैं ने कितनी बार तुझे समझाया ताकि तू इस के त़ूलो अ़र्ज़ में ग़ौरो ख़ौज़ करे फिर भी तू इस से एराज़ करता है। क्या मेरा मरतबा तेरे नज़्दीक तेरे भाइयों से भी कम है ? ऐ मेरे बन्दे ! तेरे पास तेरा कोई भाई बैठता है तो तू उस की त़रफ़ मुकम्मल त़ौर पर मुतवज्जेह होता है और अपने दिल को मुकम्मल त़ौर पर उस की बातों की त़रफ़ मुतवज्जेह करता है, अगर इस दौरान कोई शख़्स बात करे या कोई उस की बातों में ख़लल डाले तो तू उसे इशारे से ख़ामोश कर देता है, अब जब कि मैं तेरी त़रफ़ मुतवज्जेह और तुझ से कलाम कर रहा हूं तो तेरी ह़ालत येह है कि तेरा दिल मुझ से एराज़ करने वाला है, क्या तू ने मुझे अपने भाइयों से भी कम मरतबा समझ लिया है ? (इह़याउल उ़लूम, 1/830)

क़ुरआने पाक हुज़्न से पढ़ो

क़ुरआने पाक पढ़ते हुए रोना मुस्तह़ब है कि मुस्त़फ़ा जाने रह़मत صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "क़ुरआन पढ़ो और रोओ ! अगर तुम्हें रोना न आए तो रोने जैसी सूरत बना लो।" (ابن ماجہ، 129/2، حدیث:1337, इह़याउल उ़लूम, 1/836)

क़ुरआन अच्छी आवाज़ में पढ़ा जाए

एक रिवायत में है कि "जो शख़्स क़ुरआने पाक को अच्छी आवाज़ से नहीं पढ़ता वोह हम में से नहीं।" (بخاری، 586/4، حدیث: 7527, इह़याउल उ़लूम, 1/836)

शर्ह़े ह़दीस : जो शख़्स क़ुरआन शरीफ़ ख़ुश इल्ह़ानी (यानी अच्छी आवाज़) से न पढ़े वोह हमारे त़रीक़े से ख़ारिज है। मालूम हुवा कि बुरी आवाज़ वाला भी ब क़दरे त़ाक़त उ़म्दगी से क़ुरआन शरीफ़ पढ़े कि ख़ुश आवाज़ी क़ुरआने करीम का ज़ेवर है, जिस से तिलावत में कशिश पैदा होती है, लोगों के दिल माइल होते हैं, इस लिए येह तब्लीग़ का ज़रीआ़ है। (मिरआतुल मनाजीह़, 3/266)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

रोना कहां है ?

ह़ज़रते सय्यिदुना सालेह़ मुर्री رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ फ़रमाते हैं : मैं ने ख़्वाब में हु़ज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सामने क़ुरआने पाक की तिलावत की तो आप ने इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "ऐ सालेह़ ! येह तिलावते क़ुरआन है तो रोना कहां है ?" (इह़याउल उ़लूम, 1/836)

ब तकल्लुफ़ रोने का त़रीक़ा

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمَا फ़रमाते हैं : "जब तुम अल्लाह पाक के लिए आयते सज्दा तिलावत करो तो सज्दा करने में जल्दी न करो यहां तक कि रोने लगो, अगर तुम में से किसी की आंख न रोए तो उस के दिल को रोना चाहिए।"

(इस का त़रीक़ा) येह है कि दिल में ग़म को ह़ाज़िर करे कि इस से रोना पैदा होता है। हु़ज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "क़ुरआन ग़म के साथ नाज़िल हुवा, लिहाज़ा जब तुम इस की क़िराअत करो तो ग़म ज़ाहिर करो।" (مجمع الزوائد، 7/351، حدیث:11694مفہوماً, इह़याउल उ़लूम, 1/836)

ग़म की कैफ़िय्यत पैदा करने का त़रीक़ा

ग़म की कैफ़िय्यत पैदा करने का त़रीक़ा येह है कि इस में वारिद तम्बीहात व वई़दात और अ़हद व पैमान को याद करे, फिर इस के अवामिर व नवाही (यानी जिन बातों के करने और जिन कामों के न करने का हु़क्म दिया गया है, उन) के मुआ़मले में अपनी कोताहियों में ग़ौरो फ़िक्र करे तो बिल यक़ीन वोह ग़मगीन होगा और रोने लगेगा। अगर उस पर ग़म और रोने की कैफ़िय्यत त़ारी न हो जैसे साफ़ दिल वालों पर त़ारी होती है तो उसे न रोने और ग़मगीन न होने पर रोना चाहिए क्यूंकि येह सब से बड़ी मुसीबत है। (इह़याउल उ़लूम, 1/837)

पोशीदा अ़मल की फ़ज़ीलत

एक रिवायत में है कि “पोशीदा अ़मल अ़लानिया अ़मल पर 70 गुना ज़ियादा फ़ज़ीलत रखता है।” (شعب الایمان، 1/408، حدیث:556مفہوماً, इह़याउल उ़लूम, 1/840)

ह़ज़रते अबू मूसा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ के बारे में फ़रमाने नबवी

हु़ज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ की क़िराअत सुन कर इरशाद फ़रमाया : “इसे दाऊद عَلَیْہِ السَّلَام की सी ख़ुश आवाज़ी अ़त़ा हुई है।” (بخاری، 3/416، حدیث:5048) जब येह बात ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ को पहुंची तो उन्हों ने अ़र्ज़ की : “या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! अगर मुझे मालूम होता कि आप सुन रहे हैं तो मैं मज़ीद ख़ुश इल्ह़ानी से पढ़ता।” (क़ूतुल क़ुलूब, 1/112, इह़याउल उ़लूम, 1/844)

क़ुरआन में क्या है ?

मन्क़ूल है कि क़ुरआने पाक में मैदान, बाग़ात, हु़जरे, दुल्हनें, रेशमी लिबास, बाग़ीचे और सराएं (यानी मुसाफ़िर ख़ाने) हैं। लफ़्ज़े मीम क़ुरआने पाक के मैदान हैं, लफ़्ज़े रा क़ुरआने पाक के बाग़ात हैं, लफ़्ज़े ह़ा इस के हु़जरे हैं, तस्बीह़ से शुरूअ़ होने वाली सूरतें क़ुरआने पाक की दुल्हनें हैं, حٰمٓ क़ुरआने पाक के रेशमी कपड़े हैं, मुफ़स्सल सूरतें उस के बाग़ीचे हैं और इस के इ़लावा सराएं (यानी मुसाफ़िर ख़ाने) हैं। जब क़ुरआने पाक पढ़ने वाला मैदानों में दाख़िल होता, बाग़ात से फल चुनता, हु़जरों में दाख़िल हो कर दुल्हनों के पास जाता, रेशमी लिबास पहनता, बाग़ीचों में सैर करता है और सराए में सुकूनत इख़्तियार करता है तो येह सब उसे घेर लेता और अपने मा सिवा से फेर देता है, फिर न तो उस का दिल दूसरी त़रफ़ मुतवज्जेह होता है और न ही उस की सोच मुन्तशिर होती है।

(इह़याउल उ़लूम, 1/850)

अगर दिल पाक हो जाएं तो...

मुसलमानों के तीसरे ख़लीफ़ा ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी और ह़ज़रते सय्यिदुना हु़ज़ैफ़ा बिन यमान رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا ने फ़रमाया : अगर दिल पाक हो जाएं तो क़ुरआने पाक की तिलावत से कभी सैर न हों। (इह़याउल उ़लूम, 1/871)

मेरा रब्बे करीम मुझे कब याद करता है ?

ह़ज़रते सय्यिदुना साबित बुनानी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "मुझे उस साअ़त (वक़्त) का इ़ल्म है जिस में मेरा रब मेरा ज़िक्र फ़रमाता है।" ह़ाज़िरीन झुंजला कर कहने लगे : "येह आप को कैसे पता चलता है ?" फ़रमाया : "जब मैं उस का ज़िक्र करता हूं तो वोह मेरा चर्चा करता है।" (इह़याउल उ़लूम, 1/886)

ज़िक्र की दो क़िस्में

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "ज़िक्र दो क़िस्म के हैं : ﴾1﴿ जो सिर्फ़ बन्दे और अल्लाह पाक के दरमियान हो (कोई और इस पर मुत्तलअ़ न हो)। येह याद भी क्या ही ख़ूब और अ़ज़ीम अज्र वाली है। ﴾2﴿ और इस से भी ज़ियादा फ़ज़ीलत वाला ज़िक्र येह है कि इन्सान अल्लाह पाक की ह़राम कर्दा चीज़ों के मुआ़मले में अल्लाह पाक को याद रखे (यानी ह़राम काम का ख़याल आते ही रब्बे करीम को याद करे और ह़राम कारी से बाज़ रहे)।"

(इह़याउल उ़लूम, 1/890)

दुआ़ के आदाब

﴾1﴿ दुआ़ के अच्छे अवक़ात का ख़याल रखे। ﴾2﴿ दुआ़ मांगने वाला मुक़द्दस अह़वाल से भी फ़ायदा उठाए। ﴾3﴿ दुआ़ क़िब्ला रुख़ हो कर मांगी जाए।

﴾4﴿ दुआ मांगते वक़्त आवाज़ न तो आहिस्ता हो कि ख़ामोशी कहलाए और न ही ज़ियादा बुलन्द। ﴾5﴿ दुआ में हम वज़्न अल्फ़ाज़ लाने का तकल्लुफ़ न किया जाए। ﴾6﴿ दुआ गो आजिज़ी व इन्किसार करने वाला और उम्मीद व ख़ौफ़ रखने वाला हो। ﴾7﴿ दुआ की क़बूलिय्यत का यक़ीन और उम्मीदे वासिक़ हो। ﴾8﴿ सुवाल करने में इसरार करे और अपनी दुआ तीन मरतबा दोहराए। ﴾9﴿ दुआ का आग़ाज़ ज़िक्रुल्लाह से किया जाए न कि सुवाल से ﴾10﴿ तौबा करना, ज़ुल्मन लिया हुवा माल वापस करना और अपनी पूरी कोशिश से अल्लाह पाक की त़रफ़ मुतवज्जेह होना। (इह़याउल उ़लूम, 1/908 ता 918)

रसूले करीम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की एक दुआ

नबिय्ये पाक صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ालते सज्दा में येह दुआ फ़रमाई :

اَعُوْذُ بِرِضَاكَ مِنْ سَخَطِكَ وَاَعُوْذُ بِمُعَافَاتِكَ مِنْ عُقُوْبَتِكَ وَاَعُوْذُ بِكَ مِنْكَ لَا اُحْصِیْ ثَنَاءً عَلَيْكَ اَنْتَ كَمَا اَثْنَيْتَ عَلٰی نَفْسِكَ

यानी मैं तेरी नाराज़ी से तेरी रिज़ा की और तेरी सज़ा से तेरी आ़फ़िय्यत की पनाह मांगता हूं, (यानी तेरी ज़ात से तेरी सिफ़ात की पनाह या तेरे ग़ज़ब से तेरे रह़म की पनाह) तेरी ह़म्द मैं नहीं कर सकता तो ऐसा ही है जैसी तू ने ख़ुद अपनी ह़म्द की। (مسلم، ص252، حدیث: 476, इह़याउल उ़लूम, 1/883)

तस्बीह़ात उंगलियों पर पढ़नी चाहिएं

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللہُ عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : "मैं ने हु़ज़ूर صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को शुमार करते हुए तस्बीह़ पढ़ते देखा।" एक और रिवायत में हु़ज़ूर صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : उंगलियों पर शुमार करो क्यूंकि येह उंगलियां बोलेंगी। (ابوداؤد، 2/116، حدیث: 1502، 1501مفہوماً)

दुआ़ ज़रूर करो

ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान बिन उ़यैना رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : तुम अपनी ज़ात में कोई बुराई पा कर दुआ़ से बाज़ न रहो क्यूंकि अल्लाह पाक ने सब से बुरी मख़्लूक़ शैत़ान की भी दुआ़ क़बूल फ़रमाई। (इह़याउल उ़लूम, 1/917)

दुआ़ का एक ख़ूबसूरत अदब

दुआ़ का एक अदब येह है कि अपनी दुआ़ तीन मरतबा दोहराए। ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللہُ عَنْہ फ़रमाते हैं : रसूले करीम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जब भी दुआ़ या सुवाल करते तीन मरतबा करते।

(इह़याउल उ़लूम, 1/917, مسلم، ص991، حدیث:1794)

जो चाहे कर मैं ने तुझे बख़्श दिया

बन्दा जब कोई गुनाह कर बैठे फिर कहे : "اَللّٰھُمَّ اغْفِرْلِیْ यानी या अल्लाह पाक ! मुझे मुआ़फ़ फ़रमा।" तो अल्लाह पाक फ़रमाता है : "मेरे बन्दे से गुनाह हो गया और वोह जानता है कि उस का रब है जो गुनाह पर पकड़ भी फ़रमाता है और बख़्श भी देता है। ऐ मेरे बन्दे ! जो चाहे कर मैं ने तेरी बख़्शिश फ़रमा दी।"

(इह़याउल उ़लूम, 1/933, مسلم، ص1474تا1475، حدیث:2758)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ❀❀❀ صَلَّی اللہُ عَلٰی مُحَمَّد

मुआ़फ़ी मांगने का फ़ायदा

मुआ़फ़ी मांग लेने वाला गुनाह पर अड़ा रहने वाला नहीं अगर्चे दिन में 70 बार गुनाह करे। (इह़याउल उ़लूम, 1/933, ابوداؤد، 2/121، حدیث:1514)

इस ह़दीसे पाक के तह़त मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ फ़रमाते हैं : (येह शर्त़ है कि) ब वक़्ते तौबा गुनाह से बाज़ (यानी दूर) रहने का पूरा इरादा हो और अगर तौबा के वक़्त ही येह ख़याल है कि गुनाह करता ही रहूंगा, तो येह तौबा नहीं बल्कि (مَعَاذَ اللّٰہ) इस्लाम का मज़ाक है। (मिरआतुल मनाजीह़, 3/364)

सोना बेहतर है

बाज़ बुज़ुर्ग फ़रमाते हैं : लोगों पर एक ऐसा ज़माना आएगा कि उन के तमाम आमाल में अफ़ज़ल अ़मल ख़ामोशी और नींद होंगे। बहुत से आ़बिद ऐसे हैं कि उन की बेहतरीन ह़ालत नींद है। येह उस वक़्त है जब वोह रिया के लिए इ़बादत करे और उस में इख़्लास न हो। (इह़याउल उ़लूम, 1/1007)

नींद में एतिदाल क्या है ?

नींद में एतिदाल येह है कि रात और दिन में आठ घन्टे सोए फिर अगर इतने घन्टे रात में ही सो चुका हो तो दिन में सोने का कोई मत़लब नहीं।

(इह़याउल उ़लूम, 1/1009)

ख़्वाब के बारे में अ़जीब बात

मुस्त़फ़ा जाने रह़मत صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जब बन्दा बा वुज़ू सोता है उस की रूह़ अ़र्श की त़रफ़ ले जाई जाती है तो उस के ख़्वाब सच्चे होते हैं। अगर बा वुज़ू न सोए तो उस की रूह़ पहुंचने से क़ासिर रहती है और उसे परेशान कुन ख़्वाब आते हैं जो सच्चे नहीं होते।" (معجم اوسط، 4/63، حدیث: 5220ماخوذاً)

त़हारत से ज़ाहिरी व बात़िनी दोनों क़िस्म की त़हारत मुराद है, त़हारते बात़िनी ही ग़ैब के पर्दों के मुन्कशिफ़ होने में मुअस्सर होती है। (इह़याउल उ़लूम, 1/1019)

कभी क़ुरआन नहीं भूलेगा ?

मन्क़ूल है कि जो शख़्स सोते वक़्त येह आयात पढ़ेगा अल्लाह पाक उस पर क़ुरआने पाक को मह़फ़ूज़ रखेगा (यानी उसे क़ुरआने पाक याद रखने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाएगा) वोह कभी भी क़ुरआने पाक नहीं भूलेगा।

وَ اِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ ﴿۱۶۳﴾ اِنَّ فِیْ خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ وَ اخْتِلَافِ الَّیْلِ وَ النَّهَارِ وَ الْفُلْكِ الَّتِیْ تَجْرِیْ فِی الْبَحْرِ بِمَا یَنْفَعُ النَّاسَ وَ مَاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ مِنَ السَّمَآءِ مِنْ مَّآءٍ فَاَحْیَا بِهِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا وَ بَثَّ فِیْهَا مِنْ كُلِّ دَآبَّةٍ ۪ وَّ تَصْرِیْفِ الرِّیٰحِ وَ السَّحَابِ الْمُسَخَّرِ بَیْنَ السَّمَآءِ وَ الْاَرْضِ لَاٰیٰتٍ لِّقَوْمٍ یَّعْقِلُوْنَ ﴿۱۶۴﴾ (پ2، البقرہ، 163-164)

इज्तिमाअ़ में शिर्कत की फ़ज़ीलत

ह़ज़रते सय्यिदुना काबुल अह़बार رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने फ़रमाया : अगर उ़लमा की मजालिस का सवाब लोगों पर ज़ाहिर हो जाए तो वोह उस पर एक दूसरे से लड़ें ह़त्ता कि हर हुकूमत वाला अपनी हुकूमत और हर दुकानदार अपनी दुकान को तर्क कर दे। (इह़याउल उ़लूम, 1/1038)

ऐ आग के रब ! मुझे इस से नजात दे

ज़मानए रिसालत में एक शख़्स का मामूल था कि जब लोग सो जाते तो वोह नमाज़ पढ़ता, क़ुरआने पाक की तिलावत करता और बारगाहे इलाही में अ़र्ज़ करता : يَا رَبَّ النَّارِ اَجِرْنِیْ مِنْهَا यानी ऐ आग के रब्बे पाक ! मुझे इस से नजात अ़ता फ़रमा। बारगाहे रिसालत में इस शख़्स का तज़्किरा किया गया तो आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : “जब फिर ऐसा हो तो मुझे इत्तिलाअ़ देना।” (चुनान्चे, जब इत्तिलाअ़ दी गई तो) आप उस के पास तशरीफ़ लाए और

उस की बातों को सुना। जब सुब्ह हुई तो इरशाद फ़रमाया : "ऐ फ़ुलां ! तू ने अल्लाह पाक से जन्नत का सुवाल क्यूं न किया ?" उस ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मेरा इतना मक़ाम कहां और न ही मेरे आमाल इस क़ाबिल हैं। कुछ ही देर गुज़री थी कि ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्राईल عَلَیْہِ السَّلَام ने बारगाहे अक़्दस में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : "या रसूलललाह صَلَّى اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! उसे ख़बर दीजिए कि अल्लाह पाक ने उसे आग से नजात अ़ता फ़रमा कर जन्नत में दाख़िल फ़रमा दिया है।" (इह़याउल उ़लूम, 1/1054)

गुनाहों की नुहूसतें

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ह़सन बसरी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "गुनाहों के सबब बन्दे को रात में उठ कर इ़बादत करने से मह़रूम कर दिया जाता है।" ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ुज़ैल बिन इ़याज़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "अगर तुम रात में उठ कर इ़बादत करने और दिन के वक़्त रोज़ा रखने पर क़ुदरत नहीं रखते हो तो जान लो कि तुम मह़रूम हो और तुम्हारी ख़त़ाएं बहुत ज़ियादा हो गई हैं।"

(इह़याउल उ़लूम, 1/1057)

गुनाह की सज़ा में जमाअ़त छूटती है

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सुलैमान दारानी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : किसी की जमाअ़त का फ़ौत हो जाना उस के किसी गुनाह के सबब है। मज़ीद फ़रमाते हैं : रात में एह़तिलाम होना एक सज़ा और जनाबत (रह़मते इलाही से) दूरी का सबब है। (इह़याउल उ़लूम, 1/1062)

दुनिया में 5 दिन बिल ख़ुसूस लज़्ज़तों से बचिए

बाज़ उ़लमाए किराम फ़रमाते हैं : “जो दुनिया में पांच रोज़ लज़्ज़तों में रहेगा वोह आख़िरत की लज़्ज़त नहीं पाएगा। पांच दिनों से उन की मुराद येह हैं : ﴾1﴿ ई़दुल फ़ित्र ﴾2﴿ ई़दुल अज़्हा का दिन ﴾3﴿ जुमुआ़ का दिन ﴾4﴿ अ़रफ़े का दिन और ﴾5﴿ आ़शूरा का दिन।” (इह़याउल उ़लूम, 1/1075)

सोने के आदाब

﴾1﴿ वुज़ू और मिस्वाक कर के सोए। ﴾2﴿ अपने सिरहाने मिस्वाक और वुज़ू का पानी रखे। ﴾3﴿ जिस ने कोई वसिय्यत करनी हो वोह लिख कर अपने सिरहाने रखे बग़ैर न सोए। ﴾4﴿ तमाम गुनाहों से तौबा कर के सोए। ﴾5﴿ नर्म व मुलाइम बिस्तर बिछा कर ऐ़श परस्ती में न सोए बल्कि इसे बिल्कुल तर्क कर दे या फिर दरमियानी क़िस्म का बिस्तर इख़्तियार करे। ﴾6﴿ उस वक़्त तक न सोए जब तक नींद का ग़लबा न हो। ﴾7﴿ क़िब्ला रू हो कर सोए। ﴾8﴿ सोते वक़्त दुआ़ पढ़े। ﴾9﴿ सोते वक़्त येह बात याद करे कि नींद भी एक क़िस्म की मौत है। ﴾10﴿ बेदार होते वक़्त भी दुआ़ पढ़े। (इह़याउल उ़लूम, 1/1019 ता 1026)

मग़्फ़िरत की बिशारत

﴾1﴿ रोज़ा रखना। ﴾2﴿ सदक़ा देना अगर्चे थोड़ा ही हो। ﴾3﴿ मरीज़ की इ़यादत करना। ﴾4﴿ जनाज़े में ह़ाज़िर होना। इन चार उमूर के मुतअ़ल्लिक़ रिवायत में है कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : “जिस ने इन चार उमूर को एक दिन में जमा किया तो उस की मग़्फ़िरत कर दी जाएगी।” एक रिवायत में है कि “वोह जन्नत में दाख़िल होगा।” (مسلم، ص398، حدیث:2374) अगर इन में से

बाज़ के करने का मौक़ा मिले और बाज़ से आ़जिज़ आ जाए (कि किसी वजह से न कर पाए) तो उसे उस की निय्यत के एतिबार से तमाम का सवाब मिलेगा।

(इह़याउल उ़लूम, 1/1032)

शब बेदारी में आसानी के ज़ाहिरी व बात़िनी अस्बाब

ज़ाहिरी अस्बाब : ﴾1﴿ ज़ियादा खाने से परहेज़ ﴾2﴿ दिन के वक़्त नफ़्स को न थकाना ﴾3﴿ दिन के वक़्त क़ैलूला करना ﴾4﴿ दिन में गुनाहों से इज्तिनाब करना।

बात़िनी अस्बाब : ﴾1﴿ दिल का सलामत होना, बुग़्ज़ो कीना न होना ﴾2﴿ दिल पर ख़ौफ़ त़ारी हो। सुहैब (رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه) को जब जहन्नम याद आता है तो उसे नींद नहीं आती ﴾3﴿ शब बेदारी की फ़ज़ीलत में वारिद आयात व अह़ादीस और आसारे सह़ाबा व ताबेई़न पेशे नज़र हों। ﴾4﴿ ज़ाते बारी पर पुख़्ता ईमान और उस की कामिल मह़ब्बत दिल में हो। (इह़याउल उ़लूम, 1/1060 ता 1064)

शब बेदारी का सब से अफ़ज़ल त़रीक़ा

रात के पहले ह़िस्से में क़ियाम करे जब नींद का ग़लबा हो तो सो जाए, बेदार हो तो फिर क़ियाम करे, फिर नींद का ग़लबा हो तो सो जाए यूं उस के लिए रात में दो नींदें और दो क़ियाम होंगे येह रात की मशक़्क़त में से है। सब से सख़्त और सब से अफ़ज़ल है नीज़ येह प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अख़्लाक़े मुबारका में से है, सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان और ताबेई़न رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم की एक जमाअ़त ने यूंही किया। (इह़याउल उ़लूम, 1/1071)

नींद के बारे में एक बुज़ुर्ग का क़ौल

एक बुज़ुर्ग फ़रमाते हैं : नींद पहली ही मरतबा है जब मैं बेदार हो जाऊं और दोबारा सोना चाहूं तो अल्लाह पाक मुझे न सुलाए। (इह़याउल उ़लूम, 1/1071)

फ़ेहरिस्त

उ़न्वान	सफ़्हा	उ़न्वान	सफ़्हा
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	1	दुआ़ के आदाब	9
सफ़रे ह़ज के आदाब	1	रसूले करीम ﷺ की एक दुआ़	10
ह़ज की चार क़िस्में	2	तस्बीह़ात उंगलियों पर पढ़नी चाहिएं	10
सफ़र को सफ़र कहने की वजह ?	2	जो चाहे कर मैं ने तुझे बख़्श दिया	11
ह़ज की क़बूलिय्यत की निशानी	3	मुआ़फ़ी मांगने का फ़ायदा	11
क़ुर्बे ख़ुदावन्दी का बेहतरीन ज़रीआ़	3	सोना बेहतर है	11
3 चीज़ें क़ुव्वते ह़ाफ़िज़ा का सबब	4	नींद में एतिदाल क्या है ?	12
कसरते तिलावत के सवाब	4	ख़्वाब के बारे में अ़जीब बात	12
अल्लाह पाक का अपने बन्दे से कलाम	5	कभी क़ुरआन नहीं भूलेगा ?	12
क़ुरआने पाक ह़ुज़्न से पढ़ो	5	इज्तिमाअ़ में शिर्कत की फ़ज़ीलत	12
क़ुरआन अच्छी आवाज़ में पढ़ा जाए	6	ऐ आग के रब ! मुझे इस से नजात दे	13
रोना कहां है ?	6	गुनाहों की नुह़ूसतें	13
ब तकल्लुफ़ रोने का त़रीक़ा	7	गुनाह की सज़ा में जमाअ़त छूटती है	14
ग़म की कैफ़िय्यत पैदा करने का त़रीक़ा	7	दुनिया में 5 दिन बिलख़ुसूस लज़्ज़तों से बचिए	14
पोशीदा अ़मल की फ़ज़ीलत	8	सोने के आदाब	14
क़ुरआन में क्या है ?	8	मग़्फ़िरत की बिशारत	15
अगर दिल पाक हो जाएं तो...	8	शब बेदारी में आसानी के ज़ाहिरी व बात़िनी अस्बाब	15
मेरा रब्बे करीम मुझे कब याद करता है ?	9	शब बेदारी का सब से अफ़्ज़ल त़रीक़ा	15
ज़िक्र की दो क़िस्में		नींद के बारे में एक बुज़ुर्ग का क़ौल	16

अगले हफ़्ते का रिसाला

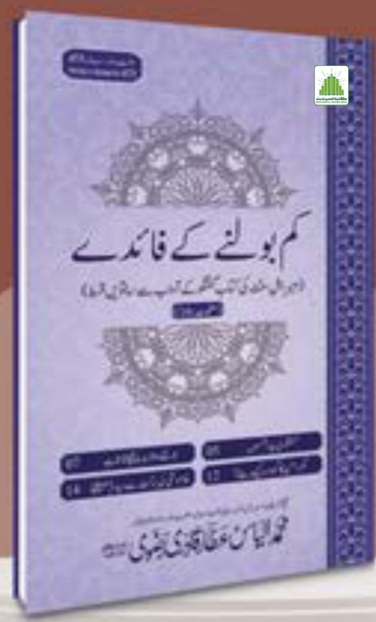

DAWATEISLAMI INDIA

FGN Channel
Dekhte Rahiye

MAKTABATUL MADINA INDIA

Delhi : 421, Urdu Market, Matia Mahal, Jama Masjid, Delhi-110006 +91-8178862570

Mumbai : 19/20, Mohammad Ali Road, Opp. Mandavi Post Office, Mumbai-400003 +91-9320558372

Ahmedabad : Faizane Madina, Tinkonia Bagicha, Mirzapur, Ahmedabad-380001 +91-9327168200

Nagpur : Opp. Garib Nawaz Masjid, Saifi Nagar Road, Mominpura, Nagpur-440018 +91-9326310099

www.maktabatulmadina.in feedbackmmhind@gmail.com

For Home Delivery of Books Please Contact on (T&C Apply) +91-9978626025